



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY.

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)
PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राप्तिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 530]

मई बिल्ली, बोरवार, अक्टूबर 6, 1988/आश्विन 14, 1910

No. 530] NEW DELHI, THURSDAY, OCTOBER 6, 1988/ASVINA 14, 1910

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या वी जाती हैं जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a
separate compilation

वित्त मंत्रालय
(राजस्व विभाग)
नई दिल्ली, 6 अक्टूबर, 1988
ग्राविसूचना

सं. 28/88-केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क (एन. टी.)

सा.का.नि. 996(अ) —केन्द्रीय सरकार, केन्द्रीय
उत्पाद-शुल्क और नमक अधिनियम, 1944 (1944 का
1) की धारा 37 द्वारा प्रदत्त वाक्तियों का प्रयोग करते हुए,
केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क नियम, 1944 का और संशोधन करने
के लिए निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात्—

1. (1) इन नियमों का संग्रहित नाम केन्द्रीय उत्पाद-
शुल्क (संशोधन) नियम, 1988 है;

(2) ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त
होगी।

2. केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क नियम 1944 में,
(क) नियम 57व के उपनियम (2) के परन्तुक के
स्थान पर निम्नलिखित परन्तुक रखा जाएगा,
अर्थात्—
“परन्तु यह तब जब कि ऐसे मध्यवर्ती “उन्पादों”—
(क) का ऐसे अनियम उत्पाद के विनिर्माण में जिस पर
उत्पाद-शुल्क, आहे पूर्णतः या भागत... उद्ग्रहणीय
है, उत्पादन के कारब्लाने के भीन उपयोग किया
जाता है; और
(ख) को नियम 57क के अधीन जारी की गई किसी
मध्यसूचना के अधीन निवेश या अन्तिम उत्पाद
के रूप में विनिर्दिष्ट किया जाता है।”
(ख) नियम 57च में, उपनियम (5) के परचात्,
निम्नलिखित उपनियम अन्तस्थापित किया जाएगा,
अर्थात्—

“(6) किसी विनिर्माता द्वारा किए गए आवेदन पर कलकट्ट, ऐसी शर्तों और परिस्थितियों के अधीन रहते हैं, जो वह अधिरोपित करे उस विनिर्माता को, जो प्रख्यात अ. जी. 23 के अपने बातें में मुजरा-रकम रखता हो और जो विनिर्माता के संयत या कारबाहने को दूसरे स्थल पर अन्तर्राजि त करने के कारण अप्रयुक्त पढ़ी हो, उसी विनिर्माता के ऐसे कारबाहने को पूर्वोक्त खाते में की मुजरा-रकम का अन्तर्राजि त करने के लिए अनुमति दे सकेगा।”

(ग) नियम 57म में उपनियम (1) के स्थान पर निम्नलिखित उपनियम द्वारा जारीगा, अर्थात् —

“(1) (i) जहां निर्णयों पर गदत शुल्क का मुजरा किसी निर्धारिती या किसी विनिर्माता या किसी निर्धारिती को और से हुई किसी गलती, लोप या गलत सरचना के कारण हिसाब में लिया गया है वहां समुचित अधिकारी, ऐसे मुजरे की तारीख से छह मास के भीतर ऐसे विनिर्माता या निर्धारिती पर सूचना की तामील कर सकेगा जिसने ऐसा मुजरा लिया है, ऐसा वह उसमें यह कारण दर्शित करने की अपेक्षा करते हुए कर सकेगा कि उसे ऐसे मुजरे के लिए अनुमति क्यों नहीं किया जाना चाहिए और जहां मुजरे का पहले ही उपयोग किया जा चुका है वहां ऐसे मुजरे के समतुल्य रकम, उससे बहुत क्या नहीं की जानी चाहिए —

परन्तु यह कि जहां मुजरे को किसी विनिर्माता या किसी निर्धारिती की ओर से किसी जानबूझ कर किए गए गलत कथन, दुरमिस़धि या तथ्यों के व्यावह के कारण हिसाब में लिया गया है वहां इस खण्ड के उपबन्ध ऐसे प्रभावी होने वालों “छह मास” मन्त्रों के स्थान पर “पांच वर्ष” शब्द रखे गए हों।

(ii) समुचित अधिकारी, ऐसे विनिर्माता या निर्धारिती द्वारा, जिस पर खण्ड (i) के अधीन सूचना की तामील की गई है, किए गए अभ्यावेदन, यदि कोई हो, पर विचार करने के पश्चात् अनुमति दिए जाने वाले ऐसे मुजरे की रकम को (जो हेतुक दर्शित करने वाली सूचना में विनिर्दिष्ट रकम से अधिक न हो) अवधारण करेगा और तदुपरि ऐसा विनिर्माता या निर्धारिती यदि ऐसे मुजरे का उपयोग कर लिया गया हो तो अनुमति किए

गए मुजरे के समतुल्य रकम का सदाय करेगा अथवा इस प्रकार अनुमति दिए गए मुजरे का उपयोग नहीं करेगा।”

[फा. स. 267/108/87-सी.एक्स. 8]
के सी. सिंह, उप मन्त्रिव

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue)

New Delhi, the 6th October, 1988

NOTIFICATION

NO. 28/88-CENTRAL EXCISES (N.T.)

G.S.R. 996 (E).—In exercise of the powers con- terred by section 37 of the Central Excises and Salt Act, 1944 (1 of 1944), the Central Government hereby makes the following rules further to amend the Central Excise Rules, 1944, namely :—

1. (1) These rules may be called the Central Excise (6th Amendment) Rules, 1988.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2 In the Central Excise Rules, 1944,—

(a) in rule 57D, in sub-rule (2), for the proviso, the following proviso shall be substituted, namely,—

“Provided that such intermediate products are—

(a) used within the factory of production in the manufacture of final product on which the duty of excise is leviable whether in whole or in part, and

(b) specified as inputs or as final product under a notification issued under rule 57A.”;

(b) in rule 57F, after sub-rule (5), the following sub-rule shall be inserted, namely :—

“(6) On an application made by a manufacturer, the Collector may, subject to such conditions and limitations as he may impose, permit a manufacturer having credit in his account in form RG 23A and lying unutilised on account of shifting of the plant or factory, belonging to the manufacturer, to another site, to transfer the credit in the account aforesaid to such factory of the same manufacturer.”;

(c) in rule 57I, for sub-rule (1), the following sub-rule shall be substituted, namely :—

“(1) (i) Where credit of duty paid on inputs has been taken on account of an error, omission or misconstruction, on the part of an officer or a manufacturer, or an assessee, the proper officer may, within

six months from the date of such credit, serve notice on the manufacturer or the assessee who has taken such credit requiring him to show cause why he should not be disallowed to such credit and where the credit has already been utilised, why the amount equivalent to such credit should not be recovered from him:

Provided that where such credit has been taken on account of wilful mis-statement, collusion or suppression of facts on the part of a manufacturer or an assessee, the provisions of this clause shall have effect as if for the words "six months" the word "five years" were substituted.

(ii) The proper officer, after considering the representation, if any, made by the manufacturer or the assessee on whom notice is served under clause (i), shall determine the amount of such credit to be disallowed (not being in excess of the amount specified in the show cause notice) and thereupon such manufacturer or assessee shall pay the amount equivalent to the credit disallowed, if the credit has been utilised, or shall not utilise the credit thus disallowed."

[F No. 267/108/87-CX.8]

K. C. SINGH, Dy. Secy.

